Journal of Research in Education
ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) : 2582-2357
Vol.9 No.2 | December, 2021 | pp. 102-116

St. Xavier's College of Education
(Autonomous)
Digha Ghat, Patna,Bihar-800011

शिक्षा के आयाम : दिल्ली के जनपथ बाजार में हस्तशिल्प वस्तुओं की बिक्री से सम्बंधित गुजराती महिलाओं के अनुभव एवं चुनौतियाँ

सपना तिरकी*
संजना तिरकी**

सार

शिक्षा जीवन को एक आधार प्रदान करता है जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को एक नयी दिशा देता है शिक्षा के द्वारा ही हम अपने जीवन को आधार प्रदान करते हैं। इस संसार में शिक्षा सभी जीवित प्राणियों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है परन्तु महिलाओं के लिए शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वे समाज में दोहरी भूमिका का निर्वाहन करती हैं, जिसमें वे अपने साथ अपने परिवार की देखभाल भी करती हैं, परन्तु प्रश्न यह उठता हैं कि अगर महिलाएं शिक्षित भी न हों और उनके घर की आर्थिक स्थिति की जिम्मेदारी भी इन्ही के हाथ में हो, तो ये किस प्रकार इन जिम्मेदारियों का वहन कर पाती हैं। यह प्रश्न इसलिए भी महत्वपूर्ण है, कि क्या केवल विद्यालय की डिग्री किसी व्यक्ति के शिक्षित होने का प्रमाण है अथवा अपने आस–पास के वातावरणीय अनुभवों के अनुसार स्वयं को रूपांतरित करना भी शिक्षित होने का एक प्रमाण हैं। राजधानी दिल्ली एक ऐसा शहर है, जो देश–विदेश के लोगों को विभिन्न कारणों से अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। दिल्ली स्थित बाजार हमेशा से विदेशी लोगों के लिए कौतुहल और आकर्षण का केंद्र रहे हैं। इसी तरह दिल्ली स्थित जनपथ

* शोधार्थी (पी.एच.डी) केन्द्रीय शिक्षण संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
** शोधार्थी (पी.एच.डी) केन्द्रीय शिक्षण संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

बाज़ार में भी कई विदेशी लोगों को यहाँ पर सामानों की खरीदारी करते हुए देखे जा सकते हैं। इस बाजार में मुख्य रूप से महिलाएं हस्तशिल्प कला से सम्बंधित सामानों के विक्रय से जुड़ी हुई हैं, यह महिलाएं हिंदी, गुजराती भाषा के साथ अंग्रेजी भाषा में भी काफी निपुण हैं, जो उन्होंने समय के साथ अपने आसपास के लोगों से सीखा है। यही वह बिंदु था जिसकी खोज में यह लघु शोध कार्य आरम्भ हुआ। अतः यह शोध कार्य दिल्ली में जनपथ में अस्थायी रूप से दुकान चलाने वाली गुजराती महिलाओं तथा उनके अनुभवों तथा चुनौतियों पर किया गया है, जिससे उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को जानने तथा समझने का प्रयास किया गया। यह महिलाएं गुजरात की संस्कृति से सम्बंधित विभिन्न हस्तशिल्प कला से सम्बंधित वस्तुओं को बनाने तथा बेचने के कार्य से जुड़ीं हैं। व्यक्ति तथा उसके परिवार के मध्य, निम्न आर्थिक स्थिति एक ऐसा उत्तरदायी कारण है जो व्यक्ति को अपने परिवार को छोड़ने के लिए विवश करता है। अपनी स्थिति को बेहतर करने के प्रयास में एक व्यक्ति को एक नये शहर में कईं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है तथा यहीं चुनौतियाँ ही अपने साथ अनेक समाधान तथा अनुभवों को लेकर आती हैं जिससे जीवन को नयी दिशा प्राप्त होती है। इन महिलाओं ने भी यहाँ आकर यहाँ की परिस्थितियों के अनुरूप ही स्वयं को अनुकूलित किया हैं। यह शोध इन्ही के अनुभवों पर आधारित हैं।

मूल शब्द : महिलाएं, शिक्षा, चुनौतियाँ

परिचय

शिक्षा हमारे लोकतंत्र का आधार है। शिक्षा के द्वारा ही हम अपने जीवन को आधार प्रदान करते हैं। शिक्षा सभी के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, चाहे वह पुरुष हो या महिला। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का भी एक महत्वपूर्ण साधन हैं, (भट्ट, 2015) तथा भारत के सम्पूर्ण विकास में स्त्री शिक्षा एक

महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, (कुमार जे. 2013)। वर्तमान समय की मांग के अनुसार महिलाओं के लिए शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि वे समाज में दोहरी भूमिका का निर्वाहन करती हैं जिसमें वे अपने साथ–साथ अपने परिवार के सभी सदस्यों की भी देखभाल करती हैं। महिलायें मुख्य रूप से घर में अथवा घरेलू कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, (ब्रेनडन, एम.ए. तथा हूम्न्न,एन. 1979)। शिक्षित होना महिलाओं के लिए इसलिए भी आवश्यक है, जिससे वह समय–समय पर अपने महत्वपूर्ण फैसलों में अपना योगदान दे सके। शिक्षा न केवल हमारी सोच को वृहद् बनाती है, बल्कि हमें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी बनाती हैं। नायक तथा महानता (2012), ने भी अपने लेख में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण कारक माना है, जिसके द्वारा महिलायें अपनी आय पर नियंत्रण कर सकती हैं। शिक्षा न केवल असमानता को कम करती है, बल्कि देश तथा परिवार में महिलाओं कि स्थिति को बढ़ाती है, (रागी, 2020)। लेकिन प्रश्न यह उठता हैं कि अगर महिलाएं शिक्षित भी न हो और उनके घर की आर्थिक स्थिति की जिम्मेदारी भी इन्हीं के हाथ में हो तो ये किस प्रकार इन जिम्मेदारियों का वहन कर पाती हैं। अपने परिवार को देखने के साथ ही बाहर जाकर काम करना दोहरी जिम्मेदारी को जन्म देता हैं।

गुजरात राज्य, कला तथा शिल्प की भूमि हैं। यहाँ के समुदायों ने अभी भी हस्तशिल्प के कार्यों को अपनी संस्कृति में बनाये रखा हैं, (शाह एवं पटेल, 2017)। भट्ट (2006), ने भी अपने शोध पत्र के माध्यम से गुजराती महिलाओं के संघर्ष की स्थिति का बारीकी से विवरण दिया है। दिल्ली के जनपथ में अधिकांश महिलाएँ हस्तशिल्प की दुकान लगाती है, इसी दुकान से उनकी परिवार का भरण पोषण होता है तथा वे अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह प्रतिदिन करती हैं। इनमे से अधिकांश महिलाएँ गुजरात राज्य की हैं। हस्तशिल्प से सम्बंधित सामान गुजरात राज्य से मंगाया जाता हैं, तथा कुछ सामान ये महिलाएं अपने परिवार के साथ यहाँ भी बनाती हैं। ये सभी सामान अलग–अलग तरह का होता हैं, जिनमें घर के सजावट के सामान से लेकर महिलाओं के पर्स तथा दुपट्टे भी शामिल हैं।

आगे प्रस्तुत शोध कार्य से संबंधित शोध उद्देश्य तथा शोध प्रश्नों का विवरण दिया जा रहा है।

शोध उद्देश्य –

- गुजराती महिलाओं के दिल्ली में बसने सम्बन्धी कारणों को जानने तथा समझने का प्रयास करना।
- गुजराती महिलाओं के दिल्ली में आने के पूर्व की चुनौतियों के सन्दर्भ को भी समझने का प्रयास करना।

शोध प्रश्न –

1. वह कौन से कारण थे जिन्होंने गुजराती महिलाओं को दिल्ली बसने हेतु विवश किया ?
2. गुजराती महिलाओं को दिल्ली व्यवसाय हेतु बसने सम्बन्धी किन–किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं ?
3. यह महिलाएँ दिल्ली में रहने के अपने अनुभवों को किस प्रकार देखती हैं ?
4. महिलाएँ शिक्षा के प्रति क्या अभिवृत्ति रखती हैं ?

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अन्वेश्नात्मक रिसर्च डिजाईन का प्रयोग किया है। अन्वेश्नात्मक शोध में आँकड़ों का पुनः विश्लेषण किया जाता है, जो किसी उद्देश्य के लिए ही किया जाता है, (बरटन,एन.डब्लयू. 1979)। यह

मौजूदा समस्या की बेहतर समझ के लिए आयोजित किया जाता है। अन्वेषण का अर्थ मुख्यतः विचारों की खोज होता है,(स्टेबिन्स, आर. ए. 2001)। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध के प्रतिदर्श के लिए 10 प्रतिभागियों का चयन किया, जो सभी इस समय दिल्ली में निवास कर रहे हैं। अवलोकन तथा असंचरित साक्षात्कार के माध्यम से शोध उद्देश्यों को शोधार्थी द्वारा समझने का प्रयास किया गया है। सभी प्रतिभागी दिल्ली में ही रहती हैं, जिनकी आयु क्रमशः 30 वर्ष से लेकर 55 वर्ष तक की हैं। सभी प्रतिभागी घर की सजावट की वस्तुयें जैसे, कुशन कवर, वाल पेंटिंग्स तथा महिलाओं के प्रयोग के बैग इत्यादि सामान बेचती हैं।

मुख्य बिंदुओं के आधार पर विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग करके प्रतिभागियों से आँकड़े एकत्रित किये गए हैं। आँकड़ों के संग्रहण के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु प्राप्त किये गए तथा इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर आंकड़ों का विश्लेषण करने का प्रयास किया किया है। जिनका संक्षिप्त में विवरण इस प्रकार से है –

1. प्रतिभागियों का दिल्ली आने का मुख्य कारण

2. दिल्ली के जनपथ में ही दुकान लगाने का कारण

3. दिल्ली आने के बाद की चुनौतियाँ (व्यवसायिक, आर्थिक एवं महिला होने की चुनौतियाँ)

4. दिल्ली में रहने को लेकर प्रतिभागियों के अनुभव

5. शिक्षा को लेकर प्रतिभागियों का परिप्रेक्ष्य

1. गुजराती महिलाओं के दिल्ली आने का मुख्य कारण

सभी प्रतिभागियों के दिल्ली आने के मुख्य कारण अलग–अलग थे। प्राप्त आँकड़ों से शोधार्थी को यह जानकारी प्राप्त हुई कि सभी प्रतिभागियों के दिल्ली आने की परिस्थितियाँ अलग–अलग थी, जिनके कारण सभी प्रतिभागीयों को दिल्ली आना पड़ा। ये कारण कुछ हद तक व्यक्तिगत और आर्थिक थे। प्रतिभागियों के अनुसार, उनके पास अन्य कोई विकल्प नही था कि वे कहीं दूसरी जगह जाए और कुछ नया काम शुरू करे। शारदा जी (प्रतिभागी, 50 वर्षीय) ने जानकारी दी कि उनकी शादी गुजरात राज्य में हुई थी। शादी के कुछ वर्षों के बाद उनके पति ने उन्हें छोड़ दिया। कारण पूछने पर उन्हें बताया गया कि उनके पति अपने माताजी एवं पिताजी के साथ रहना चाहते थे। शारदा जी के पास अन्य कोई विकल्प नहीं था। उन्हें अपने दोनों बच्चों के भविष्य को देखते हुए दिल्ली आना पड़ा क्योंकि शारदा जी की माताजी दिल्ली में ही रहती थी। इसी तरह एक अन्य प्रतिभागी, उर्मिला जी (45 वर्षीय) शादी के बाद गुजरात राज्य में ही रहती थी। जब उनके पति का स्वर्गवास हो गया तो उर्मिला जी भी अपने दोनों बच्चो के साथ दिल्ली आ गयी। दिल्ली में उर्मिला जी का परिवार पहले से ही रहता था। इसी प्रकार प्रतिभागियों के के दिल्ली आने का मुख्य कारण उनकी निम्न आर्थिक तथा पारिवारिक स्थिति थी। दोनों प्रतिभागी इसी उद्देश्य से आयी थी कि दिल्ली आकर अपने बच्चो के भविष्य के लिए कुछ पूँजी इकट्ठी कर सके।

2. दिल्ली में बसने सम्बन्धी चुनौतियाँ

सभी प्रतिभागीयों से साक्षात्कार के दौरान शोधार्थी को यह जानकारी प्राप्त हुयी कि दिल्ली में जनपथ बाजार में गुजराती महिलाएँ ही अपनी दुकान लगा सकती हैं। यह स्थान गुजराती समुदाय की महिलाओं के लिए ही आवंटित किया गया हैं, इसलिए यह स्थान 'गुजराती लेडीज मार्किट' के नाम से भी जाना जाता हैं। इस सन्दर्भ पर बात करते हुए लता जी (30 वर्षीय) ने बताया –

ये गुजराती मार्किट हैं, इसलिए हमें यहाँ जगह मिली है, लेडीज मार्किट हैं, ना इसी वजह से , वरना इस शहर में दुकान लगाना कहाँ संभव है,

सभी प्रतिभागी गुजराती हैं इसलिए जब सभी को पता चला की यह स्थान गुजराती समुदाय के लिए निर्धारित की गई हैं तो इसलिए सभी ने यहाँ अपनी दुकान लगाने की सोची। अतः यह एक बड़ा कारण रहा जिसने गुजरात की गुजराती महिलाओं को अपनी जीविका के भरण–पोषण हेतु अपनी ओर आकर्षित किया तथा दिल्ली जैसे बड़े शहर में वहाँ बसने की चुनौतियों को कम किया या कहा जा सकता है कि उस समस्या का समाधान किया।

3. गुजरात से दिल्ली आने के बाद की चुनौतियाँ

3.1 व्यवसायिक चुनौती –

आंकड़ो के संग्रहण द्वारा इस बात की भी पुष्ठि हो पाई कि जब सभी महिलायें गुजरात राज्य से दिल्ली आयी तो सभी को अलग–अलग व्यवसायिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। जिनमें से एक गंभीर समस्या थी, दुकान लगाने की समस्या। साक्षात्कार के दौरान यह जानकारी प्राप्त हुई कि जनपथ में सभी को अपने सामानों को बेचने के लिए स्थाई दुकान नहीं मिल पाती हैं। जनपथ में अंदर की तरफ जाने पर कुछ दुकानें एक पंक्ति से बनी हुई हैं, ये सभी दुकानें स्थायी दुकानें हैं, जो मूल रूप से कुछ ही लोगों को आवंटित कर दी जाती हैं। जिन प्रतिभागियों से शोधार्थी ने बात की उनमें से केवल एक ही प्रतिभागी शारदा जी के पास अपनी स्थायी दुकान थी, जो उन्हें 25 वर्षों पहले आवंटित की गई थी। बाकी अन्य प्रतिभागी जनपथ में बाहर की तरफ दुकान लगाती हैं। यह भी जानकारी दी गयी कि जो महिलाएं अस्थायी तरीके से दुकान लगाती हैं, उन्हें स्टे–आर्डर लेना होता हैं, तभी वे अस्थायी रूप से अपनी दुकान लगा

सकती हैं। इसी क्रम में शोधार्थी को पता चला की स्टे–आर्डर लेने के बाद भी एन.डी.एम.सी (न्यू डेल्ही म्युनिसिपल कारपोरेशन) के लोग इनका सामान उठा कर ले जाते हैं। जब शोधार्थी पहली बार साक्षात्कार हेतु जनपथ गयी थी तो लता जी के द्वारा पता चला कि एन.डी.एम.सी के लोग अस्थायी दुकान होने के कारण इनका सामान उठा कर ले जाते हैं। इसलिए लता जी अपना सामान उठाकर अंदर की तरफ छिपाकर बैठी हुई थी। यह लगभग उसी समय हुआ जिस समय शोधार्थी ने अपने शोध कार्य हेतु जनपथ में प्रवेश किया, और वहाँ पर कुछ महिलाएं अपना सामान लेकर भाग रही थी और अपने सामान को लेकर छुप गयी थी, महिला होने के नाते शोधार्थी ने भी उनकी मदद की तथा उनसे बातचीत का प्रयास किया। उन्होंने अनुभव साझा करते हुए बताया–

ये लोग सामान उठा कर ले जाते हैं फिर पैसा देने पर वापस करते हैं।

इसी बात को पुख्ता करते हुए सुमन जी ने बताया की जब वे 30 वर्ष पूर्व दिल्ली आयी थी तभी से ये लोग परेशान करते आ रहे हैं।

शोधार्थी ने यह भी अवलोकित किया की सभी प्रतिभागीयों ने अपना सामान बहुत ही कम स्थान पर लगा रखा था, जिससे कि वे आसानी से अपने सामान को एकत्रित कर सके।

3.2 आर्थिक चुनौती –

हालाँकि शारदा जी पास अपनी स्थायी दुकान है, फिर भी वह इससे संतुष्ट नही है। शोधार्थी द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर शारदा जी ने अतिरिक्त जानकारी देते हुए बताया कि जनपथ में जो लोग अंदर की तरफ दुकान लगाते हैं उनकी इतनी बिक्री नही होती, जितना की बाहर की तरफ दुकान लगाने वालों की होती हैं। शोधार्थी द्वारा जब इसका कारण पूछा गया तो

शारदा जी ने बताया कि, जो लोग जनपथ में घूमने आते हैं, उन्हें अक्सर पता ही नही होता की अंदर की तरफ भी दुकाने हैं, इसी कारणवश कई लोग उनके हस्तशिल्प के सामान को नहीं देख पाते हैं, और बिक्री कम रह जाती है। शारदा जी के अनुसार –

यहाँ कम लोग आते हैं, कइयों को तो पता ही नहीं होता कि इधर भी दुकानें लगी हुई है, लोग बाहर–बाहर से ही चले जाते हैं।

अतः इन सब बातों से यह कहा जा सकता है कि वह महिलाएं जिनके पास अपनी स्थायी दुकान है तथा वे महिलाएं जिनके पास अस्थायी दुकाने है दोनों ही दिल्ली में अपने व्यवसाय को लेकर अलग–अलग प्रकार की चुनौतिओं का सामना कर रही है। सभी प्रतिभागियों से साक्षात्कार के दौरान जानकारी प्राप्त हुयी कि उन सभी की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नही है कि वे कुछ बचत कर सके। सभी महिलाएं यहाँ लगभग पूरे दिन रहती हैं तब जाकर कुछ कमा पाती हैं। उर्मिला जी अपनी आर्थिक स्थिति का विवरण देते हुए बताया कि –

इतनी कमाई नहीं होती कि हम कुछ बचा सके, गुजारा हो जाये बस इतना ही बहुत है, रोज कुआँ खोदते हैं और रोज सुखाते हैं।

इसी क्रम में आगे उन्होंने यह भी बताया कि उनका आने–जाने का किराया प्रत्येक दिन का लगभग 80 रुपये है, इसलिए उर्मिला जी इतनी ही बचत कर पाती है कि घर का खर्चा निकाला जा सके।

शोधार्थी द्वारा सभी प्रतिभागियों से बात करके शोधार्थी की यह समझ बन रही थी कि सभी की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नही थी कि वे कुछ बचा सके। इन प्रतिभागियों से बात करके यह भी जानकारी प्राप्त हुयी कि सभी महिलाएं यहाँ किराये के मकान में रहती हैं तथा इनका यहाँ अपना

घर नही हैं, जिसका इन्हें काफी दुःख हैं। इसी बात का जिक्र करते हुए पूनम जी ने यह बात स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया की –

खर्चा पानी निकल जाता है, लेकिन पैसा इकट्ठा नही कर पाए और घर नही बना पाए, यही अफसोस रहा है।

शोधार्थी ने जब दिल्ली में रहने के स्थान के विषय में बात की, तो पता चला कि उनमे से कुछ आजादपुर स्टेशन के पास से आती हैं तथा अन्य प्रतिभागी जहाँगीरपुरी में रहती हैं। इनमें से किसी भी महिला के पास अपना मकान नही हैं, सभी किराये के मकान में रहती हैं।

3.3 महिला होने की चुनौती

शोधार्थी यह भी समझना चाहती थी कि क्या महिला होने के कारण उन्होंने किसी प्रकार की चुनौतियो का सामना किया तथा करना पड़ रहा है ? यह प्रश्न पूछने पर सभी के अलग–अलग अनुभव थे। उन सभी के अनुभवों के आधार पर यह समझ बनी कि महिला होने के कारण सभी की चुनौतियाँ एक दूसरे से अलग थी। उर्मिला जी काफी समय से जनपथ पर सामान बेच रही है, उन्होंने बताया –

मैं शाम को आती हूँ, क्योंकि दिन में कमेटी वालों का डर भी रहता हैं, यहाँ पब्लिक भी शाम को आती हैं।

इसी तरह शारदा जी ने अपने अनुभव को साझा करते देते हुए बताया की उन्हें जनपथ में दुकान में बैठना व्यक्तिगत रूप से पसंद नही है क्योंकि वह यह मानती है कि जो लोग जनपथ में घूमने आते हैं, वे यही सोचते हैं की जो महिलाये दुकानों में बैठती हैं वो अच्छे घर की नहीं होती हैं इसलिए दुकानों में बैठती हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह अनुभव भी शोधार्थी से साझा किया कि गुजरात राज्य में महिलाओं से ज्यादा काम कराया जाता हैं। ज्यादातर काम महिलाओं को करने होते हैं। यही बात लता जी ने भी

स्वीकार की कि गुजरात में महिलाओं से अधिक काम कराया जाता हैं जबकि पुरुष कम काम करते हैं।

इन सभी अनुभवों के साथ ही सभी प्रतिभागियों ने यह भी स्वीकार किया कि महिला होना उनके व्यावसाय के लिए अच्छा भी हैं– जो महिलायें जनपथ में घूमने आती हैं वे सभी इन महिलाओं के पास आकर सामान खरीदना पसंद करती हैं। अपना अनुभव बताते हुए उर्मिला जी ने बताया की ''जब लेडीज बैठती हैं बाहर, तो किसी भी लेडी को आने में दिक्कत नहीं होती हैं, खुलकर बात कर सकती है, सामान भी ले सकती हैं।''

4. दिल्ली में समायोजन सम्बन्धी चुनौती

सभी प्रतिभागियों से उनकी शिक्षा के सन्दर्भ में भी बातचीत की गयी। इस दौरान जानकारी मिली कि कुछ प्रतिभागी ने कक्षा पांचवी तक पढाई की हैं, जैसे – उर्मिला जी तथा पूनम जी दोनों थोड़ा बहुत लिखना – पढ़ना जानती हैं। कुछ प्रतिभागी ने बिल्कुल भी पढ़ाई नहीं की हैं , जैसे – लता जी तथा शारदा जी। यहाँ शोधार्थी द्वारा यह जानकारी देना इसलिए आवश्यक है क्योंकि जनपथ में हर तरह के लोग आते हैं, जिनमें अक्सर विदेशी लोग होते हैं जो दूसरे देशों से यहाँ घूमने आते हैं। इसके अलावा अन्य लोगो में वे लोग भी शामिल हैं, जो भारतीय हैं। साक्षात्कार के दौरान शोधार्थी को यह जानकारी भी मिली कि सभी महिलायें थोड़ा बहुत अंग्रेजी का ज्ञान रखती हैं, क्योंकि इन सभी को भारत के बाहर से आने वाले लोगों से भी बात करनी होती हैं। सभी महिलाएं इतनी अंग्रेजी जानती हैं, कि इनका काम चल सके। इससे शोधार्थी यह समझ पाई कि ये सभी महिलाएं दिल्ली में किस तरह अपने काम को लेकर समायोजन करती आ रही हैं।

5. दिल्ली में रहने को लेकर प्रतिभागियों के अनुभव

शोधार्थी ने जब इस सन्दर्भ में सभी के अनुभव पूछे तो सभी ने

साझा किया कि यहाँ उन्हें रहना पसंद हैं तथा उन्हें दिल्ली से खासा लगाव हैं। शारदा जी को भी दिल्ली में रहना पसंद है, क्योंकि उनके बच्चे यहाँ रहकर खुश हैं। शारदा जी भी मानती है कि उन्हें भी यही अच्छा लगता है क्योंकि दिल्ली में रहकर ही वह अपने बच्चों की परवरिश कर पा रही है। एक अन्य प्रतिभागी तो अब गुजरात में रहना ही नही चाहती,क्योंकि गुजरात में जाने पर उनके बच्चों की तबीयत खराब हो जाती है तथा उन्हें वहाँ का पानी भी पसंद नही है।

शिक्षा को लेकर प्रतिभागियों का नजरिया

शिक्षा के सन्दर्भ में सभी प्रतिभागियों के विचार लगभग एकसमान है। सभी प्रतिभागी शिक्षा को आवश्यक मानते है तथा यह भी समझते हैं कि शिक्षा के द्वारा ही आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकता हैं। सभी अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ करना चाहती थी लेकिन आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण इनमें से कुछ प्रतिभागी अपने बच्चों को उतना नही पढ़ा पाए, जितना वे पढाना चाहती थी। उर्मिला जी अपने बच्चो को इसलिए पढ़ाना चाहती है, क्योंकि वह मानती है की जो सामान वह आज बेच रही है, वह सामान आज तो बिक रहा है, लेकिन वह यह भी मानती है की आज से 20 वर्षो बाद इन सामानों को कोई नही खरीदेगा। उनका यह मानना हैं की उनका सामान तो भविष्य मैं पुराना हो सकता है लेकिन शिक्षा कभी पुरानी नही होती है। शिक्षा हमेशा भविष्य में काम ही आती है। इसके साथ ही वह यह भी नही चाहती कि उनके बच्चे यही काम करे। शांति जी यह भी मानती है कि लड़के और लड़कियाँ दोनों के लिए ही शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक हैं। इसी तरह लता जी भी विचार है की सभी को पढ़ना चाहिए लेकिन वह यह भी मानती है कि अच्छी नौकरी तभी मिलती है, जब ज्यादा पढ़ाई की जाये।

अपनी विरासत को हस्तांतरित करने की आकांशा

कुछ प्रतिभागी चाहती थी कि इनके बच्चें इनकी सांस्कृतिक विरासत को सीखे ताकि आगे आने वाले समय में अगर इनके बच्चों को नौकरी न मिल पाए तो, कम से कम इस काम को एक विकल्प के रूप में रखा जा सके। इसलिए इन प्रतिभागियों ने अपने बच्चों को चाहे वे लड़की हो या लड़के, सभी को एक समान रूप से यह काम सिखाया हैं। एक प्रतिभागी ने बताया कि –

''हमने लड़के और लड़कियों को सारा काम सीखा रखा हैं, बाकी ये काम धंधा भी जरूरी हैं, इसलिए थोड़ा–थोड़ा काम सिखा दिया तो ये कर लेंगे।''

इसी के साथ ही कुछ प्रतिभागियों के विचार बिल्कुल ही अलग हैं। शांति जी चाहती है की उनके बच्चे यह काम नहीं करे, क्योंकि यह काम उन्हें पसंद नही है। उनके अनुसार यह काम बहुत मेहनत वाला होता है। उन्होंने कहा कि –

हमने तो हालात के साथ समझौता कर लिया, मैं नहीं चाहती की मेरे बच्चे भी करें।

निष्कर्ष

सभी प्रतिभागियों ने आर्थिक कारणों से लेकर बात करते हुए प्रत्येक पहलू, चाहे वह उनकी चुनौतियां हो या दिल्ली में रहने के सवाल से लेकर शिक्षा तक, सभी विषयों पर अपने विचारों से शोधार्थी को परिचित करवाया। साक्षात्कार के दौरान यह भी ज्ञात हो सका कि सभी महिलाएं यह जानती हैं कि शिक्षा सभी के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं। सभी प्रतिभागी यह बात भी स्पष्ट रूप से समझती हैं कि महिलाओं को आत्मनिर्भर होना

चाहिए, ताकि उन्हें किसी अन्य पर आर्थिक रूप से पायी न रहना पड़े। ये सभी प्रतिभागी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण ज्यादा पढ़ाई नहीं कर पाए, परन्तु शिक्षा का महत्व सभी जानती तथा मानती है इसलिए ये सभी चाहते हैं कि इनके बच्चे अच्छे से पढ़े। ये सभी भली–भांति जानती हैं कि हस्तशिल्प के काम में मेहनत ज्यादा लगती हैं तथा काम के अनुसार पैसे नहीं मिल पाते हैं। प्रस्तुत शोध से यह समझ भी बनी कि सभी प्रतिभागी मेहनती हैं और यह संभावना हैं की ये सभी अपनी पहचान बनाने की क्षमता रखती है, जो की अपने आप में प्रशंसा के योग्य हैं। शोधार्थी द्वारा (सभी कारको के आपसी जुड़ाव को समझने का प्रयास भी किया गया हैं) यह भी समझने की कोशिश की गई है कि सभी कारक एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं। शिक्षा और रोजगार परस्परएक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अगर शिक्षा सही तरीके से प्राप्त की जाये तो रोजगार की समस्या पर कुछ हद तक नियंत्रण किया जा सकता है तथा आर्थिक स्तर को बेहतर बनाया जा सकता है। शिक्षा केवल रोजगार से ही जुड़ी हुई नहीं है या यह केवल एक आय का साधन मात्र ही नहीं हैं, बल्कि यह हमें हमारे अधिकारों के बारे में हमें जागरूक भी करती है। इस प्रकार निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता शिक्षा व्यक्ति को आर्थिक रूप से सबल भी बनाती हैं तथा अपने अधिकारों का उपयोग करने के साथ –साथ जीवन के प्रत्येक स्तर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

References:

Bhat, R. A. (2015). Role of Education in the Empowerment of Women in India. *Journal of Education and Practice,* 6(10), 188-191.

Brenden, M.A., & Hooyman, N. (1976). The importance of the role of women in social development. *International Social Work*, 19(2), 18-22.

Burton, N.W. (1979). Assessment as exploratory research : A theoretical overview. *Educational Technology,* 19(12), 5-11.

Bhatt, E.R. (2006). *We are poor but so many: The story of self-employed women in India*. USA: Oxford University Press.

Kumar., Sangeeta - (2013). *Status of women education in India.* EducationiaConfab, 2(4), 162-176.

Nayak] P-] & Mahanta] B- ¼2012½-Women empowerment in India- *Bulletin of Political Economy] 5(2), 155-183.*

Ragi, P.S. (2020) "The Role of Education in Women Empowerment: *A Review. MuktShabd Journal,* 9(7,2402-2406)

Shah, A., & Patel, R. (2017). Problems and challenges faced by handicraft artisans. *Voice of Research,* 6(1), 57-61.

Stebbins, R. A. (2001). Exploratory research in the social sciences. Thousand Oaks, California : Sage Publications.

●●●